हिन्दुस्तान 05/08/23 P. 7

'लुप्त' भाषाओं को बचाने के लिए रच रहे साहित्य

अभिनव उपाध्याय

भोपाल। एक भाषा का मरना एक संस्कृति का मरना है, उस परंपरा का मरना है जिसे हमारे पुरखों ने वर्षों से संजोया था। इस उद्देश्य के साथ लुप्त होने की कगार पर खड़ी भाषाओं को बचाने का काम युवा लेखक कवि कर रहे हैं।

भोपाल में साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव उन्मेष के आदिवासी कवि सम्मेलन में हिस्सा लेने आई युवा कवयित्री मैत्रेयी पातर ने अपनी मातृभाषा तिवा को सीखा है। वह असमी, हिंदी, अंग्रेजी बखूबी जानती हैं। मैत्रेयी बताती हैं कि मैं असमी में लिखती थी लेकिन मैं तिवा हूं। तिवा में कविता लिखती हूं। मेरी तिवा में लिखी कविताओं का जर्मन में अनुवाद हुआ है। असम में शोधार्थी बताती हैं कि असम के मैदानी इलाकों में तिवा बोलने लिखने वालों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। मेरी भाषा के संरक्षण में यह योगदान है। यह मेरी पहचान से जुड़ा है। भाषा बचेगी तो पहचान भी बची रहेगी।